EDUCATIONAL PSYCHOLOGY-

B.A. (Hons) Part-III

Paper VI group-(B)

By- Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

FORMAL & NON-FORMAL EDUCATION

शिक्षा एक जीवनपर्यन्त चलनेवाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालकों का सर्वांगिण विकास होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण होता है। फलतः उस व्यक्ति के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होती है तथा उसके व्यवहारों में परिवर्तन एवं परिमार्जन आता है।

शिक्षा शब्द की संस्कृत भाषा के 'शिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ सीखना एवं सीखाना होता है। यानी शाब्दिक अर्थ के लिहाज से सीखने एवं सीखाने की क्रिया को शिक्षा कहा जाता है। इसको परिभाषित करते हुए जॉन डी०वी० ने कहा है:-

"शिक्षा व्यक्ति की उन सभी योग्यताओं का विकास होता है जो उसे अपने वातावरण पर नियंत्रण करने व अपनी भावनाओं को पूरा करने की योग्यता प्रदान करता है।"

इसी प्रकार पेस्टालाजी ने शिक्षा को मनोवैज्ञानिक ढंग से परिभाषित करते हुए कहा है:-

"शिक्षा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का प्राकृतिक, सुसमंजस्य एवं प्रगतिशील विकास है।"

उपर्युक्त परिभाषा शिक्षा के स्वरूप एवं विशेषताओं को बहुत हद तक स्पष्ट करने में सफल है।

(शिक्षा के प्रकार) - व्यवस्था की दृष्टि से शिक्षा के तीन प्रकार होते हैं:- (i) औपचारिक (ii) अनौपचारिक एवं (iii) निरौपचारिक। पाठ्यक्रम एवं प्रश्न के मांग को ध्यान में रखते हुए यहाँ केवल शिक्षा के

दो मुख्य प्रकारों की संक्षेप में व्याख्या की जायेगी।

(A) औपचारिक शिक्षा :- शिक्षा के इस प्रारूप में पाठ्यक्रम, समय, स्थान, शिक्षण विधियाँ, सारणी, पाठ्यपुस्तक सारी चीजें पहले से निश्चित एवं निर्धारित रहती हैं। वस्तुतः स्कूलों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों द्वारा दी जानेवाली शिक्षा Formal education ही होती है। इसमें शिक्षा के लिये पहले से पाठ्यक्रम बनाया हुआ रहता है और उसी के अनुरूप बच्चों को शिक्षा दी जाती है। इस तरह की शिक्षा प्रदान करने में स्कूल, मदरसा, पुस्तकालय आदि का भी प्रमुख योगदान होता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि "औपचारिक शिक्षा एक नियमित शिक्षा प्रक्रिया है जिसमें छात्र-छात्राएँ शिक्षण संस्थानों में नियमित शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा अध्यापक भी नियमित रूप से शिक्षा प्रदान करते हैं।"

(B) अनौपचारिक शिक्षा :- जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो जाता है शिक्षा का यह प्रकार औपचारिक शिक्षा के विपरीत होता है। इस प्रकार की शिक्षा में स्कूल, कालेज एवं पाठ्यक्रम आदि की कोई खास आवश्यकता नहीं होती है। वस्तुतः विकास के क्रम में अनौपचारिक शिक्षा का आगमन पहले हुआ जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलते रहती है। अनौपचारिक शिक्षा की पहली शिक्षिका माँ को कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह शिक्षा आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए अधिक लाभप्रद है। इसका प्रचलन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरे विश्व में बढ़ गया। वस्तुतः स्वाभाविक रूप से दी जानेवाली शिक्षा ही अनौपचारिक शिक्षा है। इसका कोई भी schedule पहले से निर्धारित नहीं होती है। यह एक तरह की अनियमित शिक्षा है।

औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर :-

औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में निम्नलिखित अन्तर है :-

(1) औपचारिक शिक्षा सुनियोजित होती है; क्योंकि इसकी योजना पहले से तैयार करती होती है। दूसरी तरफ अनौपचारिक शिक्षा के साथ-साथ स्वतः विकसित होता है। इसके लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है।

(2) औपचारिक शिक्षा कक्षा आधारित है जिसमें प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा प्रदान की जाती है; जबकि अनौपचारिक शिक्षा समुदाय आधारित होती है, जो कक्षा के बाहर प्रदान की जाती है। यह संग्रहालयों, संगठनों या घर पर प्रदान की जाती है

(3) औपचारिक शिक्षा का उद्देश्य पहले से निश्चित होता है, लेकिन अनौपचारिक शिक्षा प्रणाली में पहले से कोई उद्देश्य निश्चित नहीं होता है।

(4) औपचारिक शिक्षा प्रणाली में बच्चों की योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम को योजनाबद्ध तरीके से लागू करके शिक्षा देते हैं जबकि अनौपचारिक शिक्षा के लिए किसी प्रकार के पाठ्यक्रम की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

(5) औपचारिक शिक्षा के लिये शिक्षक की आवश्यकता होती है। यानी शिक्षक द्वारा ही इस शिक्षा प्रणाली में आवश्यकतानुसार शिक्षा दी जाती है, जबकि अनौपचारिक शिक्षा स्व-अर्जित होता है। इसमें शिक्षक की कोई आवश्यकता नहीं है।

(6) औपचारिक शिक्षा एक तरह की नियंत्रित शिक्षा है। वातावरण पर नियंत्रण रहता है। समय से स्कूल जाना, वर्ग में बैठना और शिक्षक की बातों को सुनना। अनौपचारिक शिक्षा में वातावरण पर कोई नियंत्रण नहीं होता है। बालक पूर्णतः स्वतंत्र होता है।

(7) औपचारिक साधन कृत्रिम एवं अस्वाभाविक होता है जबकि अनौपचारिक साधन Natural & real होते हैं। ये स्वाभाविक होते हैं।

(8) औपचारिक शिक्षा में बालकों को सचेत करके पढ़ाया जाता है, जबकि अनौपचारिक में बालक सीखने के प्रति सचेत नहीं होता है।

(9) बालकों की आचरण में परिवर्तन औपचारिक शिक्षा से प्रत्यक्षरूप से आता है, जबकि अनौपचारिक शिक्षा से आचरण का परिवर्तन परोक्षरूप से होता है। यह स्वतः होते जाता है।

(10) औपचारिक शिक्षा का बच्चों पर द्विपक्षीय प्रभाव पड़ता है, जबकि अनौपचारिक शिक्षा एकपक्षीय होता है।

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि formal एवं Non formal Education में बहुत अन्तर है। लेकिन सच्चाई यह

है कि शिक्षा के ये दोनों साधन एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरा अधूरा है। हैण्डरसन के शब्दों में - "जब बच्चा लोगों के कार्यों को देखता है, उसका अनुकरण करता है और उसमें भाग लेता है तब वह अनौपचारिक शिक्षा के रूप में शिक्षित होता है, और जब उसे सचेत करके जान बूझकर पढ़ाया जाता है तब वह औपचारिक शिक्षा होता है।" अतः दोनों ही शिक्षा प्रणालियाँ बच्चों के सर्वांगिण विकास में सहायक होती है।

रमेश कुमार
27.7.2020
मनोविज्ञान विभाग
डी के कॉलेज, डुमराँव